ज्ञान दृष्टि

पुष्प

मई 2020 अंक 10 शशिधर उज्ज्वल

प्रिय पाठकों,

'ज्ञान दृष्टि' का दसवां अंक 'पुष्प' आपके समक्ष प्रस्तुत है। 'टीचर्स ऑफ बिहार' 'ज्ञान दृष्टि' के माध्यम से पाठ्यचर्या से जुड़ी किसी एक खास टॉपिक पर आपका ज्ञानवर्द्धन तथा रोचक तथ्यों को प्रस्तुत करने को प्रयासरत है। उम्मीद है यह अंक बच्चों और पाठकों के ज्ञानवर्द्धन में मददगार सिद्ध होगा।

प्रकृति विविधताओं से भरी पड़ी है। इस विविधता को संरक्षण प्रदान करने के लिए हम सभी प्रतिवर्ष २२ मई को जैव विविधता दिवस के रूप में मनाते हैं। जैव विविधता की पहली कड़ी में हम विभिन्न प्रकार के पुष्पों की विविधता से परिचित होंगें। पुष्प, धरती माँ को प्रकृति का अनुपम उपहार है। पुष्प किसी भी पूजा-पाठ, समारोह, पर्व-त्योहार, शादी-विवाह, सामाजिक समारोह, कार्यक्रम, जन्मदिन, स्वागत आदि के लिये अभिन्न अंग होता है। पुष्प अपनी रंग, संरचना, खुशबु व आकृति की विविधता लिये हुए होता है।

इस अंक में हम रंग-बिरंगे पुष्पों के बारे में चर्चा करेंगे। पुष्पों की बनावट और अंगों से परिचय प्राप्त करते हुए इसके महत्त्व एवं उपयोग पर भी चर्चा की गई है। फूलों का राजा गुलाब, फूलों की रानी गुलदाउदी, संसार के सबसे बड़ा पुष्प रेफ्लेशिया, बिना गंध का पुष्प पलाश, राष्ट्रीय पुष्प कमल, सबसे महँगा पुष्प केसर, दूर्लभ पुष्प गूलर, आश्चर्यजनक पुष्प आर्किड आदि जैसे पुष्पों के बारे में आप जानकारी और रोचक तथ्यों से अवगत होंगे। सुगंधित इत्र प्रदान करने वाले पुष्पों से लेकर, खाने के काम में आने वाले पुष्पों तक की चर्चा इस अंक को रोचक बनाता है।

पुष्पों से लदे पौधों को देखकर हमारा मन हर्षित हो उठता है। इसकी महक हमारे मन–मस्तिष्क को तरो–ताजा कर देती है। पुष्पों का हमारे तन और मन दोनों पर प्रभाव पड़ता है। पुष्पों को शरीर पर धारण करने से इसकी शोभा बढ़ जाती है। इसकी सुगंध से मधु उत्तेजना का अहसास होता है। ये थकान को दूर करते हैं। पुष्पों के सुगंध का मस्तिष्क, हृदय और मानव पाचन क्रिया पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। जहाँ एक ओर पुष्पों का उपयोग रंग और सुगंध प्राप्त करने के लिये किये जाते हैं वहीं दूसरी ओर कुछ पुष्पों का उपयोग खाद्य पदार्थों के रूप में भी किया जाता है। स्वागत समारोह में आगन्तुक अतिथियों को पुष्प गुच्छ प्रदान करना हमारी परंपरा रही है। पूजा–पाठ, पर्व–त्योहार, शादी–विवाह, सामाजिक समारोह, भजन–कीर्तन, कार्यक्रम, जन्मदिन, दशहरा–दीपावली सभी में पुष्प की आवश्यकता होती है। यहाँ तक की किसी की कोमलता की तुलना भी हम पुष्प से करते हुए कह देते है कि 'फूलों जैसा कोमल' है।

पुष्प की सुगंध का उपयोग व्याधियों के उपचार में भी होता है। पुष्प से उपचार करने की प्रणाली 'एरोमा थिरेपी' कहलाती है।

पुष्प (Flower)

'फूल आहिस्ता फेंको, फूल बड़े नाज़ुक होते हैं...' ये फिल्मी गाना तो आपने जरूर सुना होगा और ये तो जरूर पता होगा की फूल नाज़ुक होते हैं। मगर कोई आपसे पूछे कि फूल क्या होते हैं? तो आपका जबाव क्या होगा?

पुष्प पादपों के महत्वपूर्ण प्रजनन अंग होते हैं। आकारिकीय रूप से पुष्प एक रूपान्तरित प्ररोह है, जिस पर पर्व (Node) या पर्वसन्धियां व्यवस्थित रहती हैं। पर्वसन्धियों पर पुष्पी पत्र (Floral leaves) लगी रहती हैं। यह तने या शाखाओं के शीर्ष अथवा पत्ती के अक्ष में उत्पन्न होकर प्रजनन का कार्य करता है।

पुष्पों व कलियों के विकास तथा विशेष वितरण एक साथ एक ही डंठल पर पाये जाने की व्यवस्था को **पुष्पक्रम** (Inflorescence) कहते हैं। वास्तव में पुष्पक्रम एक बहुशाखित तना है जिसके प्रत्येक शीर्ष पर एक पुष्प तैयार होता है।

पुष्प के अंग–

1. पुष्पवृन्त
2. पुष्पासन
3. बाह्यदलपुंज
4. दलपुंज
5. पुमंग
6. जायांग
7. परिदल

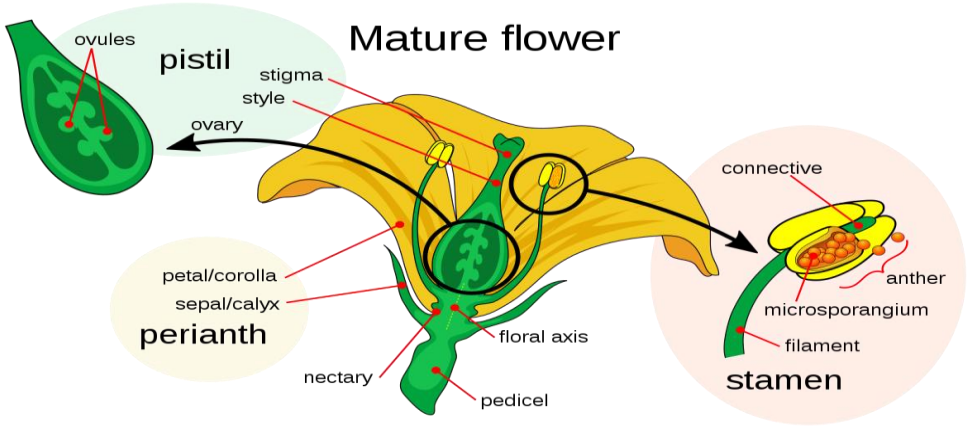

1. **पुष्पवृन्त** (Pedical)– पौधों के जिस अक्ष (Floral axis) पर पुष्प व्यवस्थित होता है, उसे पुष्पवृन्त कहते हैं।
2. **पुष्पासन** (Thalamus)– पुष्पवृन्त के अग्र सिरा जिस पर चारों प्रकार के पुष्पचक्र लगे होते हैं, को पुष्पासन कहते हैं।
3. **बाह्यदलपुंज** (Calyx) **या अंखुड़ी** (Sepal) – ये पुष्प का बाह्यदल का सबसे बाहरी चक्र है। यह प्रायः हरे रंग का होता है तथा कली अवस्था में पुष्प की सुरक्षा तथा उसके लिये प्रकाश संश्लेषण करता है। यह दो प्रकार का होता है–
   - i- संयुक्त बाह्यदल– जब बाह्यदल आपस में जुड़े हुए होते हैं। उदाहरण– गुड़हल, धतूरा आदि।
   - ii- पृथक बाह्यदल– जब बाह्यदल अलग–अलग हो। उदाहरण– गुलाब, बैंगन, टमाटर आदि।

   परन्तु किसी–किसी पुष्प में बाह्यदल रंगीन हो जाते हैं जिन्हें दलाभ (Peteloid) कहते हैं। उदाहरण के लिये ट्यूलिप, ग्लेडियोलस, आइरिस आदि। ये प्रायः कीटों को परागण के लिये आकर्षित करते हैं। बाह्यदल कभी–कभी रोम सदृश हो जाते हैं जिसे रोमगुच्छ (Pappus) कहते हैं। उदाहरण के लिये सूर्यमुखी। जबकि सिंघाड़े में बाह्यदल कंटकों में बदल जाते हैं।

4. **दलपुंज** (Corolla) **या पंखुड़ी** (Petal) – यह पुष्प का दूसरा चक्र है। इस चक्र की प्रत्येक इकाई दल (Petels) कहलाती है। यह प्रायः 2–6 दलों का बना होता है। ये प्रायः रंगीन च चमकीले होते हैं। अधिकांश पुष्पों में इनका भड़कीला रंग, सुगन्ध तथा मकरन्दकोष से निकलने वाले **मकरन्द** (Nectar) कीटों को आकर्षित कर परागण में सहायता करते हैं। यह दो प्रकार का होता है–
   - i- संयुक्त दल– जब दल आपस में जुड़े हुए हो तो उन्हे संयुक्त दल कहते हैं। उदाहरण– धतूरा, आक, सूरजमुखी, गुलदाउदी आदि।
   - ii- पृथक दल– जब दल एक–दूसरे से पृथक हो तो उन्हें पृथक दल कहते हैं। उदाहरण– गुड़हल, चना, सरसों, सदाबहार आदि।
5. **पुमंग** (Androecium)– यह पुष्प का तीसरा चक्र होता है जो कि पुंकेसरों (Stamen) से बना होता है। पुंकेसर पुष्प का नर प्रजनन अंग होता है। पुंकेसर के समूह चक्र को पुमंग कहा जाता है। इसके दो मुख्य भाग हैं **परागकोष** (Anther) तथा **पुंतन्तु** (Filament)। परागकोष में परागकण (Pollen grains) उपस्थित होते हैं जो अंकुरित होकर नर युग्मक उत्पन्न करते हैं। पुंतन्तु पतला सूत्रनुमा भाग होता है, जो पुंकेसर को पुष्पासन से जोड़ता है। परागकोष पुंतन्तु से योजी (Connective) द्वारा जुड़े रहते हैं।
6. **जायांग** (Gynoecium)– यह पुष्प का सबसे अंदर वाला केन्द्रीय भाग अथवा चौथा चक्र होता है जो स्त्रीकेसर (Stigma) से बना होता है। स्त्रीकेसर किसी पुष्प का मादा प्रजनन अंग होता है। स्त्रीकेसर के समूह चक्र को जायांग कहते हैं। इसके प्रत्येक इकाई को अण्डप (Carpel) कहते हैं। अण्डपों की संख्या के आधार पर जायोग निम्नलिखित प्रकार के होते हैं–
   - i- एकाण्डपी– जायांग एक ही अण्डप का बना होता है। उदाहरण–मटर, चना।
   - ii- द्विअण्डपी– जायांग में दो अण्डप होते हैं। उदाहरण– सरसों।
   - iii- त्रिअण्डपी– जायांग तीन अण्डपों को बना होता है। उदाहरण– प्याज।
   - iv- चतुःअण्डपी– जायांग चार अण्डपों का बना होता है। उदाहरण– क्लेरोडेन्ड्रोन।
   - v- पंचाण्डपी– जायांग पाँच अण्डपों से बना होता है। उदाहरण– गुड़हल।
   - vi- बहुअण्डपी– जायांग पाँच से अधिक अण्डपों से बना होता है। उदाहरण– अफीम।

   जायांग मादा बीजाणु उत्पन्न करता है। प्रत्येक अण्डप के तीन भाग होते हैं–

   - i- **वर्तिकाग्र** (Stigma)– यह कार्पल का सबसे ऊपर वाला फूला हुआ भाग होता है। इसके चिपचिपा होने के कारण परागकण इस पर चिपक जाते हैं।
   - ii- **वर्तिकानली** (Style)– यह एक लंबी पतली नलिका होती है। बीजांड तक पहुँचने के लिए पराग नली में से होकर जाती है।
   - iii- **अंडाशय** (Ovary)– यह पुष्पासन के ऊपर फुला हुआ भाग होता है इसमें बीजांड (Ovule) उपस्थित होते हैं। निषेचन के बाद यह फल में तथा बीजांड बीजों में विकसित होते हैं।
7. **परिदलपुंज** (Prienth)– कुछ पौधों में बाह्यदल ओर दलपुंज में अन्तर नहीं किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में प्रत्येक पत्र को परिदल (Tepal) कहते हैं। जैसे– लिली।

पुमंग एवं जायांग की की उपस्थिति के आधार पर पुष्प दो प्रकार के होते हैं

(a) **एकलिंगी पुष्प–** ऐसा पुष्प जिसमें पुंकेसर या स्त्रीकेसर में से केवल एक ही अंग उपस्थित हो, एकलिंगी (Uni-sexual) पुष्प कहलाता है। जैसे– पपीता।
यह दो प्रकार का होता है–
   - i- **नर पुष्प**– जिसमें केवल पुंकेसर होते हैं, नर पुष्प या पुंकेसरी पुष्प कहलाते हैं।
   - ii- **मादा पुष्प**– जिसमें केवल स्त्रीकेसर होता है, मादा पुष्प या स्त्रीकेसरी कहते हैं।

(b) **द्विलिंगी पुष्प या उभयलिंगी पुष्प–** ऐसा पुष्प जिसमें पुंकेसर तथा स्त्रीकेसर दोनों उपस्थित हो तो उसे उभयलिंगी या द्विलिंगी (Bi-sexual) पुष्प कहते हैं। जैसे– धतूरा, सरसों, गुड़हल आदि।

पुष्पों का परागण– परागकणों के परागकोष से मुक्त होकर उसी जाति के पौधे जायांग के वर्तिकाग्र तक पहुँचने की क्रिया को परागण (Pollination) कहा जाता है। यह दो प्रकार से होता है। जब एक पुष्प के परागकण उसी पुष्प के वर्तिकाग्र पर या उसी पौधे पर स्थित किसी अन्य पुष्प के वर्तिकाग्र पर पहुँचता है तो इसे **स्व–परागण** कहते हैं। परन्तु यदि परागकण उसी जाति के दूसरे पौधे पर स्थित पुष्प के वर्तिकाग्र पर पहुँचता है तो इसे **पर–परागण** कहते हैं। पुष्पों का पर–परागण कई माध्यमों से होता है।

परागण की विधियां–

1. कीटों द्वारा परागण
2. वायु द्वारा परागण
3. पक्षी द्वारा परागण
4. हवा द्वारा परागण
5. जल द्वारा परागण

पुष्प के कार्य– पुष्प पौधों के प्रजनन कार्य में सहायता करते हैं। ये परागण के लिये स्थान प्रदान करते हैं।

पुष्प के उपयोग

पुष्प का उपयोग पूजा–पाठ, पर्व–त्योहार, स्वागत समारोह, शादी–विवाह, दशहरा–दीपावली, जन्मदिन, कार्यक्रम, सामाजिक समारोह, मांगलिक कार्यो, राष्ट्रीय अवसरों पर, ध्वजा–रोहण में, घर–मंदिरों की सजावट, यज्ञ–स्थल की सजावट, केश सज्जा, शुभकामना या बधाई देने के लिये गुलदस्ते में, प्यार के इजहार में, संदेश प्रदान करने में, भावना प्रकट करने के लिये, पुष्प–वर्षा हेतु, आभूषण के रूप में, दूल्हे की गाड़ी या रथ सजाने में, दुल्हन की डोली सजाने में, पुष्प–माला, जयमाला, नववधु के सेज तैयार करने में, श्रद्धांजलि अर्पित करने में, सौन्दर्य प्रसाधन, इत्र, सुगन्धित तेल, क्रीम, गुलाब–जल, परफ्यूम, रूम फ्रेशनर, साबुन, अगरबत्ती तैयार करने में, बाग–बगीचे की सुंदरता बढ़ाने में, प्राकृतिक रंगों के उत्पादन में, औषधियों के निर्माण में, खाद्य पदार्थ के रूप में, एरोमा थिरेपी आदि में किया जाता है।

पुष्प का अर्थव्यवस्था में महत्व

भारत की अर्थव्यवस्था में फूलों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। भारत में कई सजावटी पुष्प बड़े पैमाने पर उगाये जाते हैं। शादी–विवाह या पर्व–त्योहारों के अवसर पर इन फूलों की भारी मांग होती है। माली का रोजी–रोजगार इन्हीं फूलों के उत्पादन से जुड़ा होता है। बाग–बगीचों की सुन्दरता को निहारने के लिये बड़े पैमाने पर पर्यटकों को भी आकर्षित करते हैं। इससे भी आय या राजस्व की प्राप्ति होती है। इतना ही नहीं बड़े पैमाने पर पुष्पों का उपयोग सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री यथा तेल, क्रीम, गुलाब–जल, परफ्यूम, रूम फ्रेशनर, साबुन का भी निर्माण किया जाता है। कुटीर उद्योग में अगरबत्ती तथा इत्र तैयार करने में किया जाता है। पुष्प चिकित्सकों के भी आय का एक साधन है। पुष्प का इस्तेमाल आधुनिक समय में सुगंध के द्वारा उपचार में भी किया जाता है, जिसे एरोमा थिरेपी कहते हैं। फूलों के बगीचों की देखरेख, माला आदि तैयार करने के लिए तथा इन्हें फिर खेतों से बाजार तक ले जाने के लिए वाहन की जरूरत होती है। इस प्रकार वाहन–चालकों, मजदूरों की भी रोजी–रोटी इससे जुड़ी हुई है। पुष्पों की उन्नत किस्मों को तैयार करने तथा अनुसंधान कार्य में कई कृषि वैज्ञानिक भी निरंतर लगे हुए रहते हैं।

गुलाब (Rose)

गुलाब को 'फूलों का राजा' कहा जाता है। यह फूल कवियों, गीतकारों को अपनी ओर बरबस ही आकर्षित कर लेता है। रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखित 'गेहूँ और गुलाब' तथा बॉलीवुड का गाना 'फूल गुलाब का लाखों में हजारों में...' से भला कौन परिचित नहीं है?

गुलाब को अंग्रेजी में Rose कहा जाता है। वनस्पति जगत में यह रोज़ेसी (Rosaceae) कुल का माना जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम *Rosa* है। गुलाब को गुलाब इसलिये कहते हैं क्योंकि यह गुलाबी रंगों का बहुतायत मिलता है।

गुलाब का पर्यायवाची– शतपत्र, पाटल, वृत्तपुष्प, स्थलकमल

वैसे तो विश्व में गुलाब की कई किस्में पायी जाती है। उसमें दमस्क गुलाब, सुगन्धित गुलाब के सभी प्रजातियों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। दमस्क गुलाब (रोजा डेमासिना) की उत्पत्ति दमस्क या मध्य–पूर्व के मेडीटिरेनियन क्षेत्र से हुई। गुलाब लाल, पीला, सफेद, हरा, काला, गुलाबी, नारंगी, बैंगनी आदि कई किस्मों का होता है।

इसका उपयोग गुलाब जल बनाने, शीतल पेय पदार्थ बनाने, इत्र बनाने, पूजा–पाठ में, पुष्प–हार बनाने, सजावटी कार्यों में किया जाता है। गर्मियों में गुलाब की पंखुड़ियां चेहरे पर मलने से शीतलता प्रदान करती हैं। आँखों में जलन और खुजली दूर करने तथा चेहरे की निखार बरकरार रखने के लिए गुलाब जल का प्रयोग किया जाता है। गुलाब तेल के उत्पादन में तुर्की और बुल्गारिया सबसे आगे हैं जबकि मोरक्को में गुलाब जल का सर्वाधिक उत्पादन होता है।

हँस भी लो:
गुलाब जामुन में न तो गुलाब होता है और न ही जामुन। ☺

नेहरू जी गुलाबों के शौकिन थे। आपको बता दूँ कि गुलाब के पुष्प यूरोप में सर्वाधिक बिकते हैं जबकि नीदरलैंड़ गुलाब का सर्वाधिक निर्यात करता है। गुलाब का पुष्प रंगों के आधार पर विभिन्न उपयोग में लाया जाता है जैसे लाल गुलाब प्यार का, सफेद गुलाब सादगी, पीला दोस्ती का, हरा गुलाब समृद्धि का, गुलाबी गुलाब प्रशंसा का, नारंगी गुलाब उत्साह का बैंगनी गुलाब राजशाही का और काला गुलाब दुश्मनी का प्रतीक माना जाता है।

❋ **रोज गार्डन (चण्डीगढ़)–** भारत के केन्द्रशासित प्रदेश चण्डीगढ़ में लगभग 30 एकड़ जमीन पर विस्तृत इस बाग का निर्माण सन् 1967 में महिंदर सिंह रंधावा ने किया था। इसमें 1600 प्रजातियों की गुलाब के पौधे लगे हैं। यह एशिया का प्रसिद्ध बगीचा है।

❋ **नेशनल रोज गार्डन (नई दिल्ली)–** भारत की राजधानी नई दिल्ली में नेशनल रोज गार्डन में दुनिया भर के नायाब किस्मों के गुलाबों का संग्रह पाया जाता है।

कमल (Lotus)

कमल प्राचीन भारतीय सभ्यता–संस्कृति और धर्म से जुड़ा हुआ है। वैदिक काल के धर्मग्रंथों में भी कमल का उल्लेख मिलता है। हिन्दु पौराणिक कथाओं में कमल का जुड़ाव ब्रह्मा, विष्णु और लक्ष्मी से मिलता है। माना जाता है कि सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा जी कमल पुष्प पर ही विराजमान होते हैं। कमल पुष्प के मध्य खड़ी देवी लक्ष्मी धन–सम्पदा प्रदायिनी मानी जाती हैं। श्री हरि विष्णु के हाथों में भी कमल पुष्प होता है। विष्णु को कमलनयन भी कहा जाता है। कमल का पौधा बौद्ध व जैन संस्कृति का भी अभिन्न अंग रहा है। बौद्ध धर्मावलंबियों का मानना है कि भगवान बुद्ध कमल के पुष्प पर ही अवतरित हुये थे। सन् 1857 की क्रांति में 'कमल व रोटी' का प्रयोग क्रांति संदेश को दूरवर्ती इलाके में पहुँचाने के लिए किया गया था।

कमल के कई समानर्थक नाम हैं– पद्म, कमल, नलिनी, सरोरूह, सरोज, अरविन्द, पंकज, रागिनी, पुण्डरीक, पुश्कर, अम्बुज, कुमुद, कुवलय, जलज, सारंग, राजीव, वारिज, मृणाल, तामरस, सरसिज, कंज, उत्पल, इन्दीवर, जलजात, कँवल, किंजल्क आदि।

कमल की उत्पत्ति मूलतः भारत में मानी जाती है। यह भारत का राष्ट्रीय पुष्प है। इसका वानस्पतिक नाम *नेलम्बो न्यूसिफेरा* है। यह हल्का गुलाबी रंग का होता है। इसे संस्कृत में पद्म, हिन्दी में कँवल, कमल व पुरैन, अंग्रेजी में लोट्स, कश्मीरी व पंजाबी में पैंपूस, कन्नड़ में तवारिगिड़ा, मलयालम में तमारा या चेनतभारा, मराठी में कमल, तमिल में तमारी तथा तेलगू में कलुंग या इर्रा–तमारा कहलाता है। कमल का पुष्प शांति का प्रतीक माना जाता है। यह पुष्प कीचड़ में रहकर भी स्वच्छ तथा पवित्र रहना सिखाता है।

यह मार्च से मई तक खिलता है। इसका खिलना ग्रीष्म ऋतु के आगमन का प्रतीक माना जाता है। विश्व में कमल की दो प्रजातियां पायी जाती हैं। पहला *निलंबो न्यूसीफेरा* और दूसरा *निलंबो ल्यूटिया*। *निलंबो न्यूसिफेरा* एशिया की देशज प्रजाति है जबकि दूसरी प्रजाति *निलंबो ल्यूटिया* अमेरिका के क्षेत्रों में पाया जाता है।

कमल का पुष्प का जीवन अवधि तीन–चार दिन होता है। पहले दिन पुष्प प्रातःकाल खिलकर दोपहर तक बंद हो जाता है। दूसरे दिन यह प्रातः से सायंकाल तक खिलता है। तीसरे दिन खिलने पर बाहरी दलपत्र झड़ना शुरू हो जाती है फलस्वरूप तीसरे दिन पुष्प ठीक से बंद नहीं होता है। चौथे दिन पुष्प के अन्य भाग भी झड़ जाते हैं।

कमल के पुष्प का औषधीय गुण भी है। इसके पुष्प यकृत रोगों तथा बुखार में प्रभावी पाए गये हैं। कमल के पुष्प को धारण करने से शरीर शीतल रहता है। फोड़े–फूंसी आदि शांत रहते हैं तथा शरीर पर विष का कुप्रभाव कम होता है। आपने भगवान विष्णु का चित्र देखा होगा। वे अनन्त नाग के कुंडल पर बनी शय्या पर विराजमान हैं तथा हाथ में कमल के पुष्प सुशोभित रहते हैं। कमल की आकृति का प्रयोग भित्ति चित्र बनाने में, रंगोली बनाने में, बंगाल में अल्पना, बिहार में अरीपना, तमिलनाडु में कोलम बनाने में किया जाता है। कमल भारतीय राजनीतिक दल भारतीय जनता पार्टी का चुनाव चिह्न है।

❁ **लोट्स टेम्पल–** भारत की राजधानी नई दिल्ली में कमल के पुष्प की आकृति का सफेद संगमरमर से बना लोट्स टेम्पल समस्त विश्व में विख्यात है।

कमल की स्वामिनी– पद्मिनी
कमल–समान नेत्रों वाली– पद्माक्षी
कमल समान रंग वाली– पद्मवर्णा
कमल के समान मुख वाली– पद्माननी
कमल की माला धारण करने वाली– पद्ममालिनी

'बेला, गुलाब, जूही, चम्पा, चमेली,
प्यारे–प्यारे फूल गुँथें माला में एक है...'

बेला (Bela)

यह जैसमीन परिवार का एक पुष्पीय प्रजाति है। यह गर्मी के दिनों में अपनी मनमोहक महक के लिये जाना जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम *जैस्मिनम अरबोरेसेंस* है।

जूही (Juhi)

यह भी जैसमीन परिवार का एक पुष्पीय प्रजाति है। इसका वैज्ञानिक नाम *जैस्मिनम औरिकुलेटम* है। जूही का पुष्प अपनी सुगंध के कारण जानी जाती है। इसके सुगंध से वातावरण शुद्ध हो जाता है और मस्तिष्क का तनाव दूर हो जाता है।

मोगरा (Mogra)

यह भी जैसमीन परिवार का एक पुष्पीय प्रजाति है। इसका वैज्ञानिक नाम *जैस्मिनम संबक* है। इसे संस्कृत में 'मालती' तथा 'मल्लिका' कहते हैं। यह गर्मी के दिनों में खिलता है। इसकी सुगंध से तन–मन को ठंडक का एहसास होता है। यह कई रोगों में दवा के रूप में भी काम आता है।

चमेली (Jasmine)

चमेली को संस्कृत में 'सौमनस्यायनी' भी कहते हैं। जैसमीन फारसी भाषा का एक शब्द 'यासमिन' से बना है जिसका अर्थ 'सुगंधित पुष्प' है। हिमालय का दक्षिणवर्ती प्रदेश इसका मूल स्थान माना जाता है। भारत से यह पौधा अरबी व्यापरियों द्वारा अफ्रीका, स्पेन और फ्रांस पहुंचा। इसका वैज्ञानिक नाम *जैस्मिनम ऑफिसनेल* है। इसके पुष्प छोटे तथा सफेद रंग के होते हैं। यह वर्षा ऋतु में खिलते हैं। यह रात में खिलता है। इसका पौधा बहुत घना होता है। माना जाता है कि चमेली का पुष्प घर–आंगन में रहने से विचारों में सकारात्मक परिवर्तन आ जाता है। थाइलैंड में जैसमीन पुष्प को पवित्र देवी का प्रतीक माना जाता है। हिन्दू धर्म में भी यह माना जाता है कि जो भी इस पुष्प से भगवान शिव की पूजा करता है उसके घर में सदा अन्नपूर्णा देवी का वास होता है। इसके पुष्प में कई औषधीय गुण भी होते हैं। यह चेहरे की कांति को बढ़ाता है। चमेली के पुष्पों की खुशबु से दिमाग की गर्मी दूर होती है। इसका अन्य उपयोग इत्र तैयार करने, साबुन, सौन्दर्य प्रसाधन, अगरबत्ती तैयार करने, तेल बनाने में किया जाता है। यह पाकिस्तान और इंडोनेशिया का राष्ट्रीय पुष्प है।

लोकोक्ति– 'छछूंदर के सिर पर चमेली का तेल', जिसका अर्थ है– कुपात्र द्वारा श्रेष्ठ वस्तु का भोग करना।

चम्पा (Plumeria)

इसे मराठी में सोनचम्पा, तमिल में चम्बुगा, बंगाली में चंपा, उड़िया में चोम्पों, चीनी में चाय–पा, संस्कृत में चम्पकम् कहते हैं। चम्पा के पुष्प में पराग नहीं होता है इसलिए इसके पुष्प पर मधुमक्खियां कभी नहीं बैठती हैं। इसकी खुशबु अत्यंत मादक होती है। इसलिए इसके पुष्प को कामदेव के पाँच पुष्पों में गिना जाता है। इसके पुष्प के रस से इत्र तैयार किया जाता है। इसके पुष्प का अन्य उपयोग पूजा के लिये, बालों के सज्जा के लिये, नववधू का सेज तैयार करने के लिये किया जाता है। वास्तु के दृष्टि से इसे सौभाग्य का प्रतीक माना गया है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इसे अमर पुष्प कहा है।

बहारों फूल बरसाओ...

'बहारों फूल बरसाओ...' शादी का मौसम हो और ये गाना न बजे, ऐसा हो नहीं सकता।

मैगनोलिया (Magnolia)

इस पुष्प का नाम फ्रांसीसी वनस्पतिशास्त्री पीएर, मगनोल के नाम पर रखा गया है। यह पुष्प वसंत ऋतु में खिलता है। यह एक ऐसा पुष्प है जो पेड़ में पत्तियां उगने से पहले ही खिलने लगते हैं। मैगनोलिया के पुष्प सफेद, गुलाबी, पीले, बैंगनी आदि रंगों के होते हैं। इसके सफेद पुष्प को शुद्धता और शान का प्रतीक माना जाता है। इसका सफेद पुष्प चंद्र देवी, पीला पुष्प सूर्य देव को अर्पण किया जाता है। गुलाबी रंग का मैगनोलिया किसी मित्रता तथा प्यार का प्रतीक माना जाता है। मैगनोलिया के पुष्प का उपयोग कई रोगों के निवारण में भी किया जाता है।

रातरानी (Night queen)

इसे चांदनी का फुल भी कहते हैं। यह वर्ष में 5 से 6 बार रात्रि के समय में गुच्छों में खिलती है। इसकी खुशबु बहुत दूर तक जाती है। रातरानी के पुष्प से इत्र भी बनता हैं इसका उपयोग महिलाएं बालों में गजरा बनाने में भी करते हैं।

रजनीगंधा (Tube rose)

इसका उद्भव स्थल मैक्सिको या दक्षिण अमेरिका है। यह उष्ण तथा उपोष्ण जलवायु में फूलने वाला पौधा है। इसे संस्कृत तथा बंगाली में रजनीगंधा, हिन्दी में गुलचेरी, तेलगू में वेरूसम्पेन्गा या नेलासम्पेना, तमिल तथा कन्नड़ में सुगंधराज के नाम से भी जाना जाता है। रजनीगंधा का पुष्प पूरे भारत में पाया जाता है। यह मार्च से दिसम्बर तक खिलता है। इसका उपयोग माला और गुलदस्ते बनाने में किया जाता है। महिलायें इसका प्रयोग बालों का गजरा बनानें में करती हैं। दूल्हे की गाड़ी सजाना हो या नववधु के सेज, इसके बिना सब फीका है। इसके पुष्प से तेल, परफ्यूम भी तैयार किया जाता है। इसके कई औषधीय गुण भी हैं।

पारिजात (Night Jasmine)

पारिजात के पुष्प को 'हरसिंगार' और 'शैफालिका' के नाम से भी जाना जाता है। इसे उर्दू में 'गुलजाफरी' कहते हैं। रोचक बात यह है कि ये पुष्प रात में खिलते हैं और सुबह होते–होते वे सब मुरझा जाते हैं। माना जाता है कि लक्ष्मी जी पर यह पुष्प चढ़ाने से वे प्रसन्न होती हैं लेकिन केवल उन्हीं पुष्प का इस्तेमाल किया जाता है जो अपने आप पेड़ से टूटकर नीचे गिर जाते हैं। यह माना जाता है कि पारिजात के वृक्ष को छूने मात्र से ही व्यक्ति की थकान मिट जाती है। यह फूल जिसके भी घर–आंगन में खिलता है, वहां हमेशा शांति और समृद्धि का निवास होता है।

ससुराल गेंदा फूल..

गेंदा (Marigold)

इसकी उत्पत्ति मूलतः मैक्सिको में माना जाता है। इसकी कई किस्में होती हैं। यह गहरे पीले, नारंगी, कत्थई, रंग के मखमली पुष्प होते हैं। कुछ किस्मों में सैकड़ों पंखुडियां होती है, इसलिये इसे 'हजारा' भी कहते हैं। इसका उपयोग पूजा–पाठ में, माला बनाने में, शादी–विवाह, दरवाजा आदि की सजावट में किया जाता है। भारत में गेंदा के पुष्प का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है। गेंदा के पुष्प का औषधीय गुण भी है। गेंदा के पुष्प को रोगाणुरोधक माना जाता है। माना जाता है कि गेंदा के पुष्प को प्रभावित हिस्से में रगड़ने से मधुमक्खी या बर्रे के डंक से होने वाले दर्द से निजात पा सकते हैं। इन फूलों से बने मरहम से चोट व मोच में आराम मिलता है। इसके कुछ प्रजातियों से इत्र भी तैयार किये जाते हैं।

केवड़ा (Kewda)

केवड़ा एक सुगंधित पुष्प है। दूसरे भाषाओं में इसे घूतिपूष्पिका, गन्धपुष्प, इंदूकलिका, नृपप्रिया, केंदा, केउर, केवरी, केवरा, गोजंगी आदि नामों से जाना जाता है। इसके सफेद प्रजाति को केवड़ा और पीली प्रजाति को केतकी कहते हैं। इसके इत्र से गर्मी में तन को शीतलता प्राप्त होती है। केवड़ा के पानी से स्नान करने से शरीर की जलन व पसीने के दूर्गंध से भी छूटकारा मिलता है। गर्मियों में नित्य केवड़ा जल से स्नान करने पर शरीर को शीतलता प्राप्त होती है। इसका उपयोग इत्र, पान मसाला, गुलदस्ते बनाने में, अगरबत्ती बनाने में, साबुन में सुगंध लाने के रूप में किया जाता है। केवड़ तेल का उपयोग औषधि के रूप में सिरदर्द और गठियावत में किया जाता है।

गुड़हल (Hibiscus)

इसे 'जावाकुसुम' या 'उड़हूल' भी कहा जाता है। गुड़हल का पुष्प देखने में अति प्रिय होता है। इसका लाल रंग का पुष्प देवी माता पर चढ़ाया जाता है। नवरात्र के दिनों में इस पुष्प की मांग बढ़ जाती है। इसके पुष्प का औषधीय प्रयोग भी किया जाता है।

सदाफूली (Periwincle)

इसका पुष्प सालों भर खिलता है इसलिये इसे सदाफूली कहते हैं। इसे 'नयनतारा' भी कहा जाता है। यह पांच पंखुडियों वाला पुष्प गुलाबी, सफेद, जामुनी, फालसाई आदि रंगों में खिलता है। इसका पुष्प मधुमेह रोग में काम आता है।

सजावटी पुष्प

सजावट की बात हो और गुलदाउदी न हो... तो फिर सजावट कैसा?

गुलदाउदी (Chrysanthemum)

पुष्पों में गुलदाउदी अपने आकर्षक रंगों के कारण अत्याधिक लोकप्रिय है। यह एक सजावटी पुष्प है। इसकी उत्पत्ति चीन में मानी जाती है। ग्रीक भाषा के अनुसार गुलदाउदी शब्द का अर्थ 'स्वर्ण पुष्प' है। यह मुख्यतः शीतऋतु में खिलती है। इसे 'शरद ऋतु की रानी' भी कहा जाता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसकी खेती जापान, अमेरिका, इंग्लैंड, चीन, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, चीन, नीदरलैंड, भारत में किया जाता है। गुलदाउदी की विभिन्न किस्में पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, कर्नाटक, बिहार, उत्तर प्रदेश में उगाई जाती है। इसकी कुछ प्रजातियां कीटनाशक गुण वाले भी होते हैं। गुलदाउदी के पुष्पों का प्रयोग चूर्ण अथवा अर्क के रूप में भी होता है। शादी–विवाह, कार्यक्रमों के अवसर पर घरों को सजाने में पूजा–पाठ में, केश सज्जा में इसका उपयोग किया जाता है।

ग्लेडियोलस (Gladiolus)

गुलदस्ते में सर्वाधिक प्रयोग किया जाने वाला यह पुष्प है। इसका वानस्पतिक नाम *ग्लेडियोलस हाइब्रिड्स* है। यह लाल, पीला, हरा, नीला, बैगनी, नारंगी, श्वेत आदि कई रंगों का होता है। विश्व में इसकी सैकड़ों किस्में पायी जाती है। ग्लेडियोलस को 'तलवार लिली' भी कहा जाता है क्योंकि इसकी पत्तियां तलवार की तरह होती है। इसका पुष्प काटने के बाद एक सप्ताह बाद तक ताजा रहता है। इसे प्रातःकाल या संध्या के समय काटने के बाद हल्के गर्म पानी में उर्ध्वाधर रखा जाता है। ध्यान रखना चाहिये की पानी पाँच इंच से अधिक न हो।

ट्यूलिप (Tulip)

ट्यूलिप मूलतः तुर्की पौधा है। यह पहाड़ी प्रदेशों में या ठंडे जगहों पर ज्यादा होता है। भारत में यह कश्मीर के क्षेत्रों में पाया जाता है। ट्यूलिप एक फारसी शब्द 'डेलबैंड' सक लिया गया है जिसका मतलब होता है– 'पगड़ी'। कहा जाता है कि तुर्की के पहले जमाने के लोग इसे अपनी पगड़ी में लगाया करते थे। यह बसन्त ऋतु में खिलता है। यह पीला, नारंगी, लाल, गुलाबी, बैंगनी आदि कई रंगों का होता है। इस पुष्प के लगभग 150 से भी अधिक प्रजाति पाये जाते हैं। इसके पुष्प दिखने में एक कप की आकृति का होता है। इसमें 6 पंखुडियां होती है। इसके पुष्प के अलग–अलग रंगों के कई अर्थों में प्रयोग किया जाता है जैसे सफेद ट्यूलिप माफी मांगने का प्रतीक, लाल ट्यूलिप प्यार का प्रतीक माना जाता है। इसके बैंगनी रंग को 'क्वीन ऑफ नाइट' भी कहा जाता है।

भारत में श्रीनगर में प्रसिद्ध ट्यूलिप गार्डन है जिसे देखने दूर–दूर से लोग आते हैं। विश्व का सबसे बड़ा ट्यूलिप गार्डन नीदरलैंड में है। यह तुर्की और अफगानिस्तान का राष्ट्रीय पुष्प है।

रेफ्लेसिया (Rafflesia)

इसे वनस्पति जगत का **सबसे बड़ा पुष्प** होने का गौरव प्राप्त है। इसका व्यास एक मीटर तथा भार लगभग दस किलोग्राम तक हो सकता है। यह मुख्यतः इंडोनेशिया के सुमात्रा द्वीप और मलेशिया के घने वर्षा–वनों में पाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम *रेफ्लेसिया अरनाल्डाई* है। सर थॉमस स्टामफोर्ड रेफल्स और डॉ. जोसेफ अरनॉल्ड ने सन् 1816 में सुमात्रा (इंडोनेशिया) में सर्वप्रथम इसका पता लगाया था और उन्हीं के नाम पर इसे यह नाम दिया गया।

रेफ्लेसिया एक ऐसा पौधा है जिसमें जड़, तना, पत्तियां नहीं पायी जाती है बल्कि यह तंतुवत रचनाओं के रूप में पोषक पौधे के अंदर धँसा रहता है। यह तब तक दिखाई नहीं देता जब तक इसका पुष्प बंदगोभी के समान दिखाई देने वाली कली के रूप में नहीं प्रस्फूटित हो जाता है। बाहर निकली हुई कली से पुष्प बनने की प्रक्रिया अत्यंत धीमी होती है। जिसमें दस महीने का समय लगता है। रेफ्लेसिया के कली से फूल बनने की संख्या मात्र 10–20 प्रतिशत ही है। इस पौधे में नर तथा मादा पुष्प अलग–अलग होते हैं। इसके पुष्प में पाँच पंखुड़ियां होती हैं। पंखुडियां लगभग 2.5 सेमी. मोटी और चमड़े की तरह दिखाई पड़ती है। पुष्प के मध्य भाग में गहरा गड्ढ़ा होता है जिसमें प्रजननांग पाये जाते हैं।

रोचक बात है कि इस पुष्प से सुगंध की जगह सड़े हुए मांस की तरह दुर्गंध या बदबू निकलती है। यह दुर्गंध कुछ मक्खियों को अपनी ओर आकर्षित करती है जो परागण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परागण के लिए यह आवश्यक है कि नर और मादा दोनों पुष्प एक ही समय पर और नजदीक में खिले हुए हों। यही कारण है कि रेफ्लेसिया के पुष्पों की संख्या तथा वितरण सीमित है।

ऑर्किड (Orchid)

ऑर्किड शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द *'orchis'* से हुई है जिसका अर्थ है–'अंडकोष'। ऑर्किड अपनी आकर्षक बनावट के लिए जाना जाता है। इसकी सुंदरता अद्वितीय होता है। यह पुष्प उष्णकटिबंधीय, भू–मध्यरेखीय प्रदेशों में पाया जाता है। ऑर्किड की कई प्रजातियां पायी जाती है। ये मूलतः स्थलीय तथा मृतोपजीवी होते हैं। कई किस्मों की आर्किड की पुष्प संरचना अनेक जीव–जन्तुओं से मिलता–जुलता होने के कारण आम बोल–चाल की भाषा में इसे कई रोचक नामों से जाना जाता है। जैसे– मंकी आर्किड, बर्ड आर्किड, स्पाइडर आर्किड, स्कॉर्पिअन आर्किड, डांसिंग लेडी ऑर्किड, घोस्ट ऑर्किड, फ्लाई आर्किड आदि।

मंकी आर्किड– इसका वानस्पतिक नाम ड्रेकुला सिमिआ है। इसके फूलों की आकृति बन्दर की तरह होता है इसलिये इसे 'मंकी आर्किड' भी कहते हैं। इसके पुष्प से पके संतरे की तरह महक आती है। इसके पुष्प देने का कोई निश्चित मौसम नहीं है। वर्ष में कभी भी पुष्पित होने लगता है। यह दक्षिण अमेरिका तथा इक्वेडोर के वर्षा–वनों में पाया जाता है।

बौगेनवेलिया (Bougainvillea)

यह बेल की प्रजाति का काँटेदार पौधा है। इसकी गुलाबी, पीला, सफेद आदि कई प्रजातियां पायी जाती है। कभी–कभी इसे 'कागज के फूल' के रूप में भी जाना जाता है।

अमलतास (Golden shower)

आयुर्वेद में इसे स्वर्णवृक्ष कहते हैं। इसके पुष्प पीले रंग के गुच्छेदार होते हैं। इसका पुष्पन काल मार्च से मई तक होता है। इसकी गोल कलियां कानों में लटकने वाली बूंदों के समान दिखाई पड़ती है। जब पूरा वृक्ष गर्मी की तेज धूप में फूलों से लद जाता है तो मनमोहक दृश्य पैदा करता है। इसके वृक्ष भारत और बर्मा के जंगलों में बहुतायत पाया जाता है।

पलाश (Scared tree)

पलाश के पुष्प को सौन्दर्य का प्रतीक माना जाता है क्योंकि इसके गुच्छेदार पुष्प दूर से ही आकर्षित करते हैं। इसे पलाश, ढाक, टेसू, केसू तथा छूल नामों से भी जाना जाता है। यह मार्च से अप्रैल के बीच पुष्पित होता है। इन दिनों में पलाश का जंगल दूर से ऐसा प्रतीत होता है मानों आग की ज्वाला निकल रही हो। इसी कारण इसे 'वन की ज्वाला' भी कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम '*ब्यूटिआ मोनोस्पर्मा* है।

रोचक बात यह है कि इसका नाम ब्यूटिआ 'भारतीय वर्गिकी के जनक' सर विलियम रॉक्सबर्ग ने 18वीं सदी में वनस्पति प्रेमी व इंग्लैंड के प्रधानमंत्री जॉन स्टुअर्ट ''अर्ल ऑफ ब्यूट'' की स्मृति में रखा जिसे श्री जे. जी. कोइनिग ने प्रस्तावित किया था। यह सफेद, लाल और पीले रंग का होता है। प्राचीन काल से ही लाल पलाश के वृक्ष का धार्मिक महत्व रहा है। पौराणिक साहित्य में इसे ब्रह्म वृक्ष कहा जाता है क्योंकि इसे ब्रह्मा का प्रतीक माना जाता है। इसके पुष्पों से लाल रंग निकाला जाता है जो कि कपड़े रंगने के काम में आता है। उत्तर प्रदेश तथा झारखण्ड सरकार ने लाल पलाश को राजकीय पुष्प घोषित किया है।

छुईमुई (Touch me not)

इसे लाजवन्ती भी कहा जाता हैं। इसका वानस्पतिक नाम *माईमोसा पुदिका* है। इसके गुलाबी फूल बड़े ही मनमोहक लगते हैं।

शंख पुष्पी (Shankhpushpi)

इसे 'विष्णुकांता' भी कहा जाता है। इसकी आकृति शंख की तरह होने के कारण इसे शंखपुष्पी कहते हैं। यह पुष्प गर्मियों में अधिक खिलता है। इसका पौधा घास की तरह होता है। इस पौधे का औषधीय महत्व

बहुत अधिक है। इसके सेवन से सुस्ती नहीं आती और मस्तिष्क में ताजगी रहती है।

धतूरा (Daturas)

यह एक झाड़ीदार पौधा है। यह काले–सफेद दो रंगों का होता है। काले धतूरा का फूल नीले रंग का होता है। यह भगवान शिव का पसंदीदा पुष्पों में से एक माना जाता है। आचार्य चरक ने इसे 'कनक' और सुश्रुत ने 'उन्मत्त' नाम से संबोधित किया है। इसके कई समानार्थी शब्द हैं जैसे मातुल, कंटफल, शिवप्रिय, तूरी, उन्मत्त, कनक आदि। धतूरा एक विषैला पौधा है। इस पौधे पर एक मुहावरा भी प्रचलित है 'धतुरा खाए फिरना' जिसका अर्थ है 'पागल बनना फिरना' या 'उन्मत्त के समान घूमना'।

कनेर (Oleander)

यह एक विषैला पुष्प है। यह कई रंगों का होता है। जैसे पीला, सफेद, लाल आदि। इसकी उत्पत्ति मूलतः मैक्सिको तथा मध्य अमेरिका में मानी जाती है।

मदार (Giant calotrope)

इसको स्थानीय भाषा में मदार, आक, अर्क और अकौआ भी कहते हैं। इसका पुष्प सफेद–नीले रंग का होता है। माना जाता है कि यह भगवान शिव का प्रिय पुष्प है। यह विषैला पुष्प होता है।

नागफनी (Cactus)

नागफनी मरूस्थल में उगने वाला कंटीला पौधा है। नागफनी की कई प्रजातियां होती हैं। लेकिन इनके पुष्प बड़े ही आकर्षक होते हैं।

कंटकारी (Cyphochilus)

इसे आम बोल चाल की भाषा में 'रेगनी' भी कहा जाता है। यह कंटीला होता है। इसके पौधे का औषधीय महत्त्व भी है। इसकी कई प्रजातियों तथा रंग होती हैं। कुछ पुष्प नीले होते हैं तो कुछ सफेद। पीले रंग की कंटकारी की आकृति कप के समान होती है।

गूलर का फूल

यह एक रहस्यमयी पुष्प है। माना जाता है कि इसके पुष्प रात्रि के समय खिलते हैं। इसके पुष्प कभी पृथ्वी पर नहीं गिरते। हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार, इसके पुष्प कुबेर देवता की संपदा मानी जाती है इसलिये यह पृथ्वी वासियों को उपलब्ध नहीं है। यह भी माना जाता है कि जो लोग इसे देख लेते है वे धनवान बन जाते हैं। कई लोग गूलर के फूल देखने का दावा करते हैं लेकिन वास्तव में वे गूलर के फूल नहीं होते। इसीलिए तो मुहावरा भी है– 'गूलर के फूल होना' जिसका अर्थ है– दुर्लभ वस्तु या अदृश्य होना।

अगस्त्य का फूल

अगस्त एक अद्भूत गुणों वाला वनस्पति है। अगस्त तारा या नक्षत्र के उदय होने पर (अक्टूबर–दिसम्बर) में इसमें पुष्प आते हैं जो लगभग मार्च तक फूलते रहते हैं। इसे अगाथी, अगसी, अग्चे, आदि अन्य नामों से भी जाना जाता है। अगस्त्य का पुष्प सफेद अथवा गुलाबी रंग के होते हैं। यह शीत ऋतु में फूलता है। इसके पुष्प का आयुर्वेदिक महत्व है। माना जाता है कि इसके पुष्प के सेवन से शरीर के विषैले तत्व निकल जाते हैं। इसके पेड़ में आयरन, विटामिन, प्रोटिन, कैल्शियम और कार्बोहाइड्रेट पर्याप्त मात्रा में होते हैं। इसमें औषधीय गुण भरपुर मात्रा में पाया जाता है। उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल में इसके फूलों की पकौड़े खाये जाते हैं। इसमें प्रतिरोधक क्षमता काफी पाया जाता है।

कोहड़े का फूल

कोहड़ा एक शाकिय लता है। इसके पुष्प का इस्तेमाल पकौड़े बनाने में किया जाता है।

शहजन का फूल

शहजन एक सब्जी प्रदान करने वाला वृक्ष है। इसके पुष्पों का उपयोग भी पकौड़े, सब्जी बनाने में किया जाता है। यह औषधीय रूप से काफी महत्वपूर्ण वृक्ष है।

केसर (Saffron)

केसर संसार का सबसे महँगा मसाला है जो केसर के पुष्प के वर्तिका से तैयार किया जाता है। केसर मूल रूप से एशिया में पाया जाता है। इसकी खेती भारत, ईरान, मोरक्को, स्पेन आदि देशों में की जाती है। इसका वानस्पतिक नाम *क्रोकस सैटाइवस* है। यह असाधारण खुशबु, रंग और स्वाद के लिये जाना जाता है।

मौसमी पुष्प

ग्रीष्म ऋतु के पुष्प– इस प्रकार के पुष्पों का पुष्पन गर्म वातावरण में होता है। इनको उगाने के लिये फरवरी–मार्च में नर्सरी में बीज की बुवाई की जाती है तथा मार्च के अन्तिम सप्ताह या अप्रैल के प्रथम सप्ताह में नर्सरी से क्यारियों में रोपण किया जाता है। इस वर्ग में गेंदा, सूर्यमुखी आदि पौधे आते हैं।

वर्षा ऋतु के मौसमी पुष्प– वर्ष ऋतु में उगाये जाने वाले पुष्पों के लिये गर्म तथा आर्द्र वातावरण की आवश्यकता होती है। इस ऋतु के पौधे तैयार करने की नर्सरी में बीजों की बुवाई मई–जून में कर दी जाती है। उसके बाद पौधा का क्यारियों में रोपण जून–जुलाई माह में कर दिया जाता है। इस समूह में चौलाई, बालसम आदि पुष्पीय पौधे आते हैं।

शीत ऋतु के मौसमी पुष्प– जाड़े के दिनों में उगाये जाने वाले मौसमी पुष्पों के लिए कम तापमान की आवश्यकता होती है। इस समय उगाये जाने वाले पुष्पों की नर्सरी सितम्बर तक तैयार कर लेते हैं तथा अक्टुबर में उन्हें क्यारियों में रोपा जाता है। इस समूह में गुलदाउदी, गेंदा, कैलेन्डूला आदि प्रमुख हैं।

विभिन्न देशों के राष्ट्रीय पुष्प

विभिन्न देशों के राष्ट्रीय पुष्प		
क्रम सं.	**देश**	**राष्ट्रीय पुष्प**
1.	ईरान	गुलाब
2.	भारत	कमल
3.	सूडान	उड़हुल
4.	तुर्की	ट्यूलिप
5.	बांग्लादेश	जलकुम्भी
6.	फ्रांस	लिली
7.	कनाडा	सफेद लिली
8.	मैक्सिको	डहेलिया
9.	यूनाइटेड किंगडम	गुलाब
10.	पाकिस्तान	चमेली
11.	लाओस	चम्पा
12.	निकारगोवा	चम्पा
13.	अफगानिस्तान	ट्यूलिप

फूलों की घाटी (Valley of flowers)– भारत के राज्य में गढ़वाल क्षेत्र के चमोली जिले में बद्रीनाथ धाम से 20 किलोमीटर दूर फूलों की घाटी स्थित है। यह नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान का एक अंग हैं। हिमालय की गोद में बसा यह उद्यान लगभग 87.5 वर्गकिमी. क्षेत्र में विस्तृत है। यहाँ वर्षा के दिनों में मध्य जून से मध्य अक्टूबर तक लगभग 500 किस्मों के पुष्पों से यह घाटी ढँक जाता है। इसका खोज सन्1931 में एक ब्रिटिश पर्वतारोही ने किया था। यह फूलों की घाटी यूनेस्को द्वारा सन् 1982 में राष्ट्रीय धरोहर स्थल घोषित किया गया है।

क्या आप जानते हैं...

फूलों की नगरी किसे कहते है?

फूलों की नगरी चमोली (उत्तराखण्ड) को कहा जाता है।

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी माला में
विंध प्यारी को ललचाऊँ।।
चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि डाला जाऊँ।
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।।
मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जाएँ वीर अनेक।।

—माखनलाल चतुर्वेदी

पुष्प का पर्यायवाची– फूल, कुसुम, पुष्प, सुमन, मंजरी, प्रसुन, पुहूप, गुल।

मुहावरे

- **गूलर का फूल होना–** दुर्लभ वस्तु या अदृश्य होना
- **कली खिलना–** प्रसन्न होना
- **फूल सूंघकर रह जाना–** अत्यंत थोड़ा भोजन करना
- **मुख से फूल झड़ना–** मधुर वचन बोलना
- **धतुरा खाए फिरना–** पागल बनना फिरना

- **पुष्पसंवर्धन (Floriculture)–** फूलों की खेती को फ्लोरीकल्चर या 'पुष्पकृषि' कहा जाता है।
- **पुष्प विज्ञान (Anthology)–** पुष्पों का अध्ययन एन्थोलॉजी या 'पुष्प विज्ञान' कहलाता है।
- **उद्यान विज्ञान (Horticulture)–** फल, फूल, सब्जियों एवं सजावटी पौधों के उगाने की विधियों का अध्ययन हार्टीकल्चर या 'उद्यान विज्ञान' कहलाता है।

संकलन–
शशिधर उज्ज्वल, शिक्षक
रा0 मध्य विद्यालय, सहस्पुर बारूण, औरंगाबाद (बिहार)
मोबाइल – 7004859938
ई मेल– ujjawal.shashidhar007@gmail.com

टीचर्स ऑफ बिहार
वेबसाइट– www.teachersofbihar.org
ई–मेल– teachersofbihar@gmail.com
मोबाइल न0 – 7250818080